Marwari college, Darbhanga

Page No. 01
Date 24/04/20

Study Material

By

Dr. S.K. Suman, Asst. Prof, Dept. of Psychology

For, B.A. Part-I Psychology Honours, Paper-II

Social Psychology

Ch-1. Introduction:

*1. Nature and Scope of Social Psychology

*2. Social Psychology and its relationship with other Social Sciences.

Scanned with CamScanner

Q.2. समाज मनोविज्ञान की प्रकृति एवं क्षेत्र का वर्णन करें।
(Discuss the nature and scope of Social Psychology.)
Or, समाज मनोविज्ञान के विषय-वस्तु (Subject-matter) का वर्णन करें।
Or, समाजिक मनोविज्ञान के अध्ययन क्षेत्र की विवेचना करें।

Ans. समाज मनोविज्ञान की प्रकृति (Nature of Social Psychology) : समाज मनोविज्ञान की प्रकृति एक विज्ञान की है क्योंकि यह वैज्ञानिक पद्धतियों (Scientific method) का प्रयोग करके वैज्ञानिक ढ़ंग से व्यक्ति के व्यवहार के सम्बन्ध में अनुसंधान करता है और उसके द्वारा वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। ऐसा करते समय वह व्यक्ति को उसकी वास्तविकता से पृथक नहीं करता है। वह यह मानता है कि व्यक्ति एक मनोवैज्ञानिक प्राणी होने के साथ-ही-साथ एक सामाजिक प्राणी भी है। यह सम्बन्ध ऊपरी सम्बन्ध नहीं होता अपितु इस सम्बन्ध का एक मनोवैज्ञानिक आधार भी होता है। इस प्रकार सामाजिक मनोविज्ञान एक ओर समाजशास्त्र से तथा दूसरी ओर मनोविज्ञान से अपने को संयुक्त रखता है। क्योंकि सामाजिक सम्बन्ध समाजशास्त्र का विषय है और उस सम्बन्ध का मानसिक आधार मनोविज्ञान का अध्ययन विषय है। इन दोनों के अध्ययन विषय को एक दूसरे से जोड़ते हुए सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्ति और व्यक्ति के बीच, तथा व्यक्ति और समूह के बीच पाये जाने वाले सम्बन्धों के फलस्वरूप उत्पन्न व्यक्ति के व्यवहारों का अध्ययन करता है। अतः सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति के सम्बन्ध में आधारभूत बात यह है कि यह सामाजिक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से व्यक्ति के व्यवहारों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है।

Scanned with CamScanner

(2) समाज मनोविज्ञान की विषय-वस्तु (Subject matter of Social Psychology): समाज मनोविज्ञान विभिन्न प्रकार की सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्ति की समस्त क्रियाओं एवं प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करता है। व्यापक रूप से सामाजिक मनोविज्ञान के क्षेत्र से तात्पर्य सम्पूर्ण मानव समाज से है। समाज व्यक्तियों के समूह से बनता है। व्यक्ति अपने व्यवहारों से दूसरों को प्रभावित करता है तथा दूसरों के व्यवहार से स्वयं भी प्रभावित होता है। इस प्रकार सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक अन्त:क्रियाओं के सन्दर्भ में सम्पूर्ण समाज का अध्ययन करता है। यही सामाजिक मनोविज्ञान की विषयवस्तु है।

शेफर (Shafer) के अनुसार, सामाजिक परिस्थिति उसे कहते हैं जिसमें दो या दो से अधिक व्यक्तियों या समूहों के बीच अन्त:क्रिया (Interaction) होती है। इसी अन्त:क्रिया को लोगों ने समाज मनोविज्ञान की विषय-वस्तु (Subject Matter) माना है।

क्रेज तथा शैन्क (Katz and Schank) ने सामाजिक मनोविज्ञान की निम्नलिखित विषय-सामग्री बतलायी है—

1. सामाजिक उत्तेजनायें तथा उत्तेजनात्मक सामाजिक परिस्थितियाँ (Social stimuli and social stimulus situations)
2. सामाजिक उत्तेजनाओं से उत्पन्न होने वाली व्यक्ति की प्रतिक्रियाएँ और अनुभव (Individuals reactions and experiences arising from social stimulations)
3. व्यक्ति पर सामाजिक परिवेश का प्रभाव (Influence of Social environment on the Individual)।

समाज मनोविज्ञान का क्षेत्र (Scope of Social Psychology) :

सामाजिक मनोविज्ञान का क्षेत्र उन सभी सामाजिक व्यवहारों या कार्य-कलापों से है जिनका कोई-न-कोई मनोवैज्ञानिक आधार है और जो वास्तविक सामाजिक परिस्थितियों में घटित होते रहते हैं। इस अर्थ में सामाजिक मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत मानव का सम्पूर्ण जीवन सिमट आता है।

समाज मनोविज्ञान के क्षेत्र की व्यापकता पर अनेक मनोवैज्ञानिकों ने विचार व्यक्त किया है और अपने विचारों को समाज मनोविज्ञान के क्षेत्र के सन्दर्भ में निम्न प्रकार से प्रकट किया है—

1. कॉज व शैंक (Katz and Schank) के अनुसार, मानव को अपने साथियों के सम्बन्ध पर आधारित सामाजिक जीवन ही समाज मनोविज्ञान के लिए विषय सामग्री प्रदान करता है। कॉज व शैक के अनुसार, सामाजिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत तीन प्रकार की समस्याओं का अध्ययन किया जाता है—

(i) सामाजिक उत्तेजनाएँ और उत्तेजनात्मक सामाजिक परिस्थितियाँ (Social Stimuli and Social Stimulus Situations) : सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक उत्तेजनाओं के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप और प्रकारों का अध्ययन करता है। ये सामाजिक उत्तेजनायें जीवधारी से मिलने वाली प्रत्यक्ष और बेजानदार से मिलने वाली अप्रत्यक्ष होती हैं। ये उत्तेजनायें सरल एवं जटिल दोनों रूपों में होती हैं और समाज में सदैव विद्यमान रहकर मानव-व्यवहार को प्रभावित करती है।

(ii) सामाजिक उत्तेजनाओं में उत्पन्न होने वाली मनुष्यों की प्रतिक्रियायें और अनुभव (Men's Reactions and Experiences arising from Social Stimulation) : सामाजिक उत्तेजनाओं से प्रभावित होने वाली व्यक्तियों की प्रतिक्रियाओं और अनुभवों का अध्ययन भी सामाजिक मनोविज्ञान में होता है।

Scanned with CamScanner

(3) **(iii) व्यक्ति पर सामाजिक पर्यावरण का दीर्घकालीन प्रभाव (The long run effects of the Social Environment upon the Individual) :** सामाजिक पर्यावरण के तात्कालिक एवं दीर्घकालिक प्रभाव के दोनों पहलुओं में से दीर्घकालीन प्रभाव के कारण व्यक्ति में कुछ स्थायी गुणों या लक्षणों का संगठन होता है और सामाजिक मनोविज्ञान संगठन के इसी प्रभाव का अध्ययन करता है।

2. रावर्ट फ्रमकिन (Robert M. Frumkin) के अनुसार, आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान के सम्पूर्ण विषय-क्षेत्र को निम्नलिखित 13 भागों में विभक्त किया जा सकता है—

इस प्रकार **समाज मनोविज्ञान का क्षेत्र** वह सम्पूर्ण समाज है जहाँ तक सामाजिक अन्त:क्रियाओं का मनुष्य पर अधिकाधिक प्रभाव पड़ता है।

1. मनुष्य के सम्बन्ध में एक प्रौढ़धारा का विकास (The Development of a Mature Conception of Man) : सामाजिक मनोविज्ञान मनुष्य के सम्बन्ध में वास्तविक ज्ञान प्रदान करके एक प्रौढ़ विचारधारा का विकास करता है। ऐस (Ash) ने लिखा है कि मनुष्य का अध्ययन करने वालों में से अधिकांश ने मनुष्य के हास्यमय चित्र (Caricature) को प्रस्तुत किया है और मनुष्य का पूर्ण रूप से अध्ययन न करके उसकी कुछ प्रमुख विशेषताओं पर ही विचार किया है। अत: सामाजिक मनोविज्ञान मनुष्य के सम्पूर्ण पहलुओं का अध्ययन करता है।

2. समाजीकरण की प्रक्रिया की गतिशीलता (The dynamics of the Socialization process) : सामाजिक मनोविज्ञान समाजीकरण में विशेष रुचि रखता है। इसके अन्तर्गत एक प्राणीशास्त्रीय प्राणी का सामाजिक व्यक्ति में बदल जाने की प्रक्रिया का अध्ययन करता है। साथ ही समाज बालक को किस प्रकार मनुष्य बनाता है इस सम्बन्ध में शिकागो स्कूल (Chicago School) के जार्ज मीड (George H. Mead) ने विशेष प्रकाश डाला है। क्योंकि विभिन्न संस्कृतियों में समाजीकरण की प्रक्रिया भिन्न-भिन्न प्रकार से होती है।

3. सामाजिक अन्त:क्रिया की गतिशीलता (The dynamics of social interaction) : व्यक्ति के व्यवहार के सम्बन्ध में यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के लिए सामाजिक मनोविज्ञान अन्त:क्रियाओं के विभिन्न रूपों, जैसे—सहयोग, प्रतिस्पर्धा, संघर्ष आदि का अध्ययन विशेष रूप से करता है। किसी भी व्यक्ति के व्यवहार पर अन्य व्यक्तियों व समूहों का प्रभाव सामाजिक अन्त:क्रियाओं के फलस्वरूप पड़ता है।

4. संचार की गतिशीलता (The Dynamics of Communication) : सामाजिक मनोविज्ञान यह बतलाता है कि जनमत, प्रचार, फैशन आदि का विकास और विस्तार किस प्रकार होता है। इसके लिए यह संचार के साधनों का अध्ययन करता है।

5. सीखने-सिखाने की प्रक्रिया की गतिशीलता (The Dynamics of the Teaching-learning Process) : सीखने-सिखाने की प्रकिया में योगदान करने वाले कारकों का अध्ययन सामाजिक मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत ही किया जाता है। अर्थात् सामाजिक अन्त:क्रिया के दौरान व्यक्ति किस प्रकार सामाजिक व्यवहारों को अनुकरण, सुझाव आदि के द्वारा सीखता है या दूसरों को सिखाता है, इनका अध्ययन भी सामाजिक मनोविज्ञान करता है।

6. वैयक्तिक अन्त: प्रतिस्पर्धा का अध्ययन (The Study of Interpersonal competition) : व्यक्तियों में परस्पर होने वाली प्रतिस्पर्धा के अध्ययन के द्वारा ही व्यक्ति के मानव व्यवहार का अध्ययन किया जा सकता है। अत: समाज मनोविज्ञान ही इसके अध्ययन का एकमात्र आधार है।

Scanned with CamScanner

7. पारिवारिक सामंजस्य की गतिशीलता (The Dynamics of family adjustment) : सामाजिक मनोविज्ञान परिवार के विभिन्न सदस्यों की स्थिति तथा कार्य के प्रभावों के सन्दर्भ में पारिवारिक सामन्जस्य की समस्या का अध्ययन करता है।

8. वैयक्तिक और सामूहिक अन्तरों का विश्लेषण (The Analysis of Individual and Group differences) : इसके अन्तर्गत वैयक्तिक विभिन्नता उत्पन्न करने वाले कारकों का विश्लेषण किया जाता है जो वंशानुक्रम (Heredity) तथा पर्यावरण (Environment) सम्बन्धी कारक होते हैं। इसी प्रकार व्यक्तियों में सामूहिक विभिन्नताएँ धर्म, शिक्षा, व्यवसाय, वर्ग, जाति, प्रजाति आदि के आधार पर पनपती हैं। सामाजिक-मनोविज्ञान सामूहिक विभिन्नताओं के इन्हीं प्राणिशास्त्रीय व सामाजिक आधारों का विश्लेषण करता है।

9. समूह के निर्माण और विकास का अध्ययन (The Study of the formation and development of the Group) : व्यक्ति के समाजीकरण व व्यक्तित्व के विकास पर अत्यधिक प्रभाव समूह का पड़ता है इसलिए व्यक्ति के अध्ययन की पूर्णता के लिए समूहों के निर्माण, विकास तथा प्रभावों का अध्ययन सामाजिक मनोविज्ञान द्वारा होता है।

10. सामाजिक व्याधिकी का अध्ययन (The Study of Social Pathology) : सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक व्याधिकीय समस्याओं का अध्ययन करता है जिसके अन्तर्गत पारिवारिक विघटन, बाल अपराध, वर्ग-संघर्ष, मानसिक बीमारी, युद्ध-क्रान्ति आदि आते हैं और उनके मानसिक व सामाजिक कारकों को स्पष्ट किया जाता है जिसके कारण वे समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

11. पक्षपात का अध्ययन (The Study of Prejudices) : सामाजिक मनोविज्ञान वर्ग पक्षपात, जातीय पक्षपात, प्रजातीय पक्षपात आदि सामूहिक पक्षपातों के विभिन्न रूपों का अध्ययन करता है।

12. सामाजिक प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन (The Study of Social Perception): व्यक्ति के व्यवहारों को यथार्थ रूप में समझने के लिए सामाजिक प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन सामाजिक मनोविज्ञान करता है। सामाजिक प्रत्यक्षीकरण सामाजिक परिस्थितियों (भौतिक या अभौतिक) का प्रत्यक्ष ज्ञान कहलाता है। इसी प्रत्यक्षीकरण की सहायता से व्यक्ति उन सामाजिक स्थितियों की विवेचना करता है जिसमें उसे स्वयं क्रिया करनी पड़ती है।

13. नेता व अनुयायी के पारस्परिक सम्बन्ध की गतिशीलता (The Dynamics of the Leader-follower relationship) : नेता और अनुयायी के पारस्परिक सम्बन्धों के अध्ययन में भी सामाजिक मनोविज्ञान विशेष रुचि रखता है। नेता और अनुयायी के सम्बन्धों की समस्या प्राय: सभी क्षेत्रों में पायी जाती है। नेता का व्यवहार अनुयायियों को प्रभावित तो करता ही है परन्तु अनुयायी के बिना नेता का अपना कोई अस्तित्व नहीं होता। इसलिए सामाजिक मनोविज्ञान इनके अस्तित्व की विशेषता को अपने अध्ययन-क्षेत्र के माध्यम से दूसरों को समझाने में सहायक होता है।

क्लाईनवर्ग (Klinberg) ने भी सामाजिक मनोविज्ञान के विषय-क्षेत्र के अन्तर्गत निम्नलिखित विषयों को सम्मिलित किया है—

1. सामान्य मनोविज्ञान और सामाजिक मनोविज्ञान के पारस्परिक सम्बन्ध की व्याख्या (Interpretation of General Psychology and Social Psychology) : इसके सन्दर्भ में दो प्रकार का अध्ययन सम्मिलित होता है—

(i) असामाजिक क्रियाओं सम्बन्धी प्रेरणा, उद्वेगात्मक व्यवहार, प्रत्यक्षीकरण, स्मरण शक्ति आदि पर सामाजिक कारकों का प्रभाव, और

Scanned with CamScanner

(ii) अनुकरण, सुझाव, पक्षपात इत्यादि परम्परागत सामाजिक मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं के अध्ययन के प्रभाव की विवेचना करना।

2. बालक का समाजीकरण, संस्कृति एवं व्यक्तित्व (The Socialization of the Child, Culture and Personality) : बालक के व्यक्तित्व के विकास में समाजीकरण का विशेष महत्व है इसीलिए सामाजिक मनोविज्ञान का अध्ययन विषय समाजीकरण भी है। इसके साथ ही व्यक्तितव के अध्ययन के लिए सांस्कृतिक पक्ष का अध्ययन भी समाज मनोविज्ञान में जरूरी है।

3. वैयक्तिक एवं सामूहिक भेद (Individual and Group differences) : वैयक्तिक एवं सामूहिक भिन्नतायें किन सामाजिक कारणों से होती हैं, इनका अध्ययन सामाजिक मनोविज्ञान करता है। सामूहिक कारणों से राष्ट्रीय चरित्र भी सामाजिक मनोविज्ञान का अध्ययन विषय है।

4. मनोवृत्ति तथा मत, विचारों का आदान-प्रदान, प्रचार आदि का अध्ययन (The study of Attitudes and Opinions, Communication research, Content Analysis, Propaganda) : व्यक्ति में मनोवृत्तियों का विकास किस प्रकार होता है, उनके विचारों का आदान-प्रदान किस प्रकार होता है, जनमत का निर्माण, प्रचार के साधन क्या हैं, उसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव क्या पड़ता है आदि का अध्ययन सामाजिक मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत आता है।

5. सामाजिक अन्त:क्रिया, समूह गतिशीलता तथा नेतृत्व (Social interaction, Group dynamics and Leadership) : सामाजिक मनोविज्ञान विभिन्न मानव समूहों के बीच होनेवाली अन्त:क्रियाओं का अध्ययन करता है। समूह-निर्माण, समूह की गतिशीलता तथा समूह निर्णय आदि का विश्लेषण करता है और इसके साथ ही नेतृत्व का अध्ययन भी समाज मनोविज्ञान करता है।

6. सामाजिक व्याधिकी (Social Pathology) : सामाजिक मनोविज्ञान व्याधिकीय के विभिन्न पक्षों में मानसिक अस्वाभाविकता, बाल अपराध, सामान्य अपराध, पक्षपात, औद्योगिक संघर्ष आदि का अध्ययन करता है।

7. राजनीति घरेलू तथा अन्तर्राष्ट्रीय (Politics Domestic and International): आधुनिक समाज मनोविज्ञान राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दोनों ही स्तरों पर राजनैतिक व्यवहारों का अध्ययन करता है और राजनीति के सम्पूर्ण क्रियाकलापों की ओर व्यक्ति का ध्यान आकर्षित करता है।

सामाजिक मनोविज्ञान के अध्ययन-क्षेत्र के सम्बन्ध में क्लाईनबर्ग (Klinberg) का कहना है कि उपर्युक्त सात विभाग एक-दूसरे से पूर्णतया पृथक न होकर एक दूसरे के सहायक और पूरक हैं।

उपर्युक्त विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि समाज मनोविज्ञान की विषय-वस्तु का सम्बन्ध समाज में व्यक्ति के व्यवहार के वैज्ञानिक अध्ययन से सम्बन्धित है। इसीलिए समाज मनोविज्ञान में समाजीकरण, अनुकरण, सुझाव, सहानुभूति, सीखना, समूह, परम्परा, धर्म, व्यक्तित्व, संस्कृति, भीड़, श्रोता, समूह, नेतृत्व, प्रचार, अफवाह, जनमत, फैशन, क्रान्ति, सामूहिक-संघर्ष, सामाजिक परिवर्तन, समूह गतिशीलता, सामाजिक मानक, अन्त:समूह सम्बन्ध, सामाजिक अनुरूपता और मापक, विश्वास और मूल्य, अपराध, सामाजिक अन्त:क्रियाएँ, अभिवृत्तियाँ, पक्षपात, प्रेरणाएँ, सामाजिक प्रत्यक्षीकरण, भाषा और सम्वादों का आदान-प्रदान तथा पारिवारिक समायोजन आदि से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन करना होता है। अत: सामाजिक मनोविज्ञान अब सामाजिक परिस्थिति में तथा दूसरे व्यक्तियों के संदर्भ में व्यक्ति के व्यवहारों का अध्ययन करता है और यह समाज मनोविज्ञान का प्रमुख कार्य है।

Scanned with CamScanner